विद्या -भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, कक्षा पंचम, विषय- हिंदी ,दिनांक-07/06/2020

पाठ- 4

मिट्ठू (कहानी)

सुप्रभात बच्चों,

आज आपको मिट्ठू कहानी अध्ययन करना है। पर जो इस प्रकार है--------

बंदरों के तमाशे तो तुम देखे होंगे। मदारी के इशारे पर बंदर कैसी-कैसी नकली करते हैं , उसकी शरारती भी तुमने देखी होगी। तुमने उसे घरों से कपड़े उठाकर भागते देखा होगा। पर आज तुम्हें एक ऐसा किस्सा सुनाते हैं जिसमें मालूम होगा कि बंदर बच्चों से दोस्ती भी कर सकते हैं।

कुछ दिन हुए लखनऊ में एक सर्कस कंपनी आई थी। उसके पास शेर, भालू, चीता और कई तरह के और भी जानवर थे। इनके अलावा एक बंदर,'मिट्ठू'भी था। बच्चों के झुंड रोज इन जानवरों को देखने आया करते थे। मिट्ठू ही उन्हें सबसे अच्छा लगता। उन्हीं बच्चों में गोपाल भी था। वह रोज आता और मिट्ठू के पास घंटों चुपचाप बैठा रहता।

उसे शेर भालू, चीते आदि से कोई प्रेम ना था। वाह मिट्ठू के लिए घर से चने, मटर, केले लाता और खिलाता। मिट्ठू भी उससे इतना घुल मिल गयाथाकि बगैर उसके खिलाए कुछ ना खाता। इस तरह दोनों में बड़ी दोस्ती हो गई।

एक दिन गोपाल ने सुना कि सर्कस कंपनी वहां से दूसरे शहर में जा रही है। यह सुनकर उसे बड़ा दुख हुआ। वाह रोता हुआ अपनी मां के पास आया। बोला"अम्मा, मुझे एक अठन्नी दो। मैं,, जाकर मिट्ठू को खरीद लाऊं। वह भी मुझे ना देखेगा तो रोएगा।

मां ने समझाया"बेटा, बंदर किसी को प्यार नहीं करता। वह तो बड़ा शैतान होता है। यहां आकर सब को काटेगा, बेकार में शिकायतें सुनने पड़ेगी।"

लेकिन गोपाल पर मां के समझाने का कोई असर ना हुआ। वह रोने लगा। आखिर मां नेमजबूर होकर उसे एक अठन्नी निकाल कर दे दी। अठन्नी पाकर गोपाल खुशी के बारे फूल उठा। उसने अट्ठानी को मिट्टी से मालकर खूब चमकाया, फिर मिट्ठू को खरीदने चला। लेकिन मिट्ठू वहां दिखाई ना दिया। गोपाल का दिल भर आया-मिट्ठू कहीं भाग तो नहीं गया? मालिक को अठन्नी दिखाकरगोपाल बोला,"क्यों साहब, मिट्ठू को मेरे हाथ कहां बेचेंगे?"

बच्चों, आज के लिए इतना ही शेष अगली कक्षा में।

गृह कार्य---------

बच्चों दी गई अध्ययन- सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें। तथा समझने की प्रयास करें। और कठिन शब्द लिखें। कहानी जोर- जोर से पढ़कर अपने माता व पिता को सुनाएं।

धन्यवाद

घर में रहें सुरक्षित रहें, और स्वस्थ रहें।